क्रम से पढ़िए

1	6
2	7
3	8
4	9
5	10

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

1 श्री साजन जी के मुख के शब्द

तीनों तापों ने आन सताया है हुन रक्षा करो, महाबीर जी रक्षा करो। महाबीर जी दे चरण मैं धो धो पीवां हुन रक्षा करो महाबीर जी रक्षा करो। सजनों जिनको तीनों तापों ने सताया है चाहे वह कितने ही यत्न करें। विश्राम नहीं पा सकते। तीनों ताप क्या हैं, सजनों सुनों :-

अध्यात्मिक, अधिभौतिक, अधिदैविक । अध्यात्मिक :- जन्म का रोग विचार करना कि हमारा जीवन किस तरह बन सकता है। अधिभौतिक :- विचार करना कि किस तरीके से हमें शान्ति की प्राप्ति हो सकती है। अधिदैविक :- सब देवताओं को पूजना आज यह ब्रत रखना कल वह ब्रत रखना। विचार करना कि हमें किस तरह विश्राम मिल सकता है। सजनों सुनो :- पहले इन्सानों को संसारी फुरना और संसारी बातों का कन रस होता है। जब इन्सान विचार करता है तो सम्भल जाता है और फिर शास्त्र को पढ़ता है उसका ध्यान शास्त्र के ज्ञान के कन रस में पड़ जाता है। संसारी कन रस छोड़कर फिर शास्त्र का कन रस पड़ जाता है। लेकिन सजन इससे भी कामयाब नहीं हो सकता।

8 श्री साजन जी के मुख के शब्द

हीरा मैं पाई ओ जावां, हीरे दी वेद विदित सब नूं समझाई ओ जावां।
हीरा जे खालस सोना खोट न उस बदन में।
हीरे दी रौशनी चमक सब नूं दिखाई ओ जावां।।

2 सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द

इक बात बताऊं सुनो मेरे साजन मीटिंग लिखनी जे लिखनी जे मन चित्त ला के, ध्यान लगा के। इक बात बताऊं साजन जी सुन लीजियो परमधाम दा नज़ारा और चमत्कार सजनां नूं समझा दीजियो। बिन सूरजों अन्धेरा हटा दीजियो।

3 श्री साजन जी के मुख के शब्द
(मीटिंग का उपदेश) कामयाब किस तरह हो सकोगे ?

सजनों सुनो :- जब संकल्प लोचे प्रभु नूं ते दृष्टि प्रभु वल हो जावेगी, ओ सजनों दृष्टि प्रभु वल हो जावेगी। जेहड़े पासे संकल्प उस पासे दृष्टि ओ सजनों उस पासे दृष्टि, जो संकल्प प्रभु नूं लोचे दृष्टि किवें न जावे प्रभु वल ओ सजनो दृष्टि किवें न जावे प्रभु वल।

सजनों, अलफ है अक्षर :- अक्षर को पकड़ लो फिर 'ये' को पा कर एक रस हो कर सर्व सर्व की जानने वाले हो जाओगे। जब सजन अलफ़ की रटन लगाता है तो उस को प्रकाश हो जाता है। सजनों जब प्रकाश हो जावे तो उस प्रकाश को खड़ा कर लो और विचार करो कि हम कितने भूले रहे हैं। जो प्रकाश हमने देखा है वही प्रकाश या चमत्कार असलियत मेरा अपना आप है। कार व्यवहार करते हुए निगाह उस चमत्कार के साथ हमेशा के लिये जुड़ जावे। जुड़ कर उस असलियत को पूरी तरह स्थिर कर लेवें। दो साल उस चमत्कार को पूरी तरह देखते रहने से इन्सान पूरी तरह स्थिर हो जाता है। जब अलफ़ में खड़ा होकर परिपक्क हो गया तो अनादि जोत की प्राप्ति हो जाती है। जिन सजनों को प्रकाश नहीं होता वह यत्न करें उनका संकल्प महाराज जी को लोचे। हर समय महाराज जी का ध्यान लगाने से उनको भी प्रकाश हो जाएगा और उसके बाद वह भी उस चमत्कार में खड़े हो जाएँगे। अलफ़ पक्का हो जाने पर युवा-अवस्था आ जाती है। बल की प्राप्ति होती है और शक्ति ताकतवर हो जाती है। शक्ति ताकतवर होने से जो सजन अपने असली स्वरूप पर खड़ा हो गया फिर उससे 'ये' की प्राप्ति होती है। फिर इन्सान अलफ़ को छोड़ देता है और 'ये' के एक फुरने में खड़ा हो जाता है। दूसरे ख्यालों का नामोनिशान नहीं रहता। अलफ़ जब छूट गया और 'ये' मिल गया फिर इन्सान आकाशों आकाश पातालों पाताल सप्तद्वीप भूमण्डल में प्रवेश करता हुआ गगन मण्डल में स्थिर हो जाता है। जब गगन मण्डल में स्थिर हो गया तो फिर वह सजन प्रमादि सर्व सर्व की जानने वाला हो जाता है। फिर उसकी किरणें सब संसार में फैलती हैं और वह तीनों कालों की जानने वाला हो जाता है। यानि जो गुज़र गई जो इस वक्त जेहड़ी आने वाली तीनों कालों की पहचान कर लेता है। फिर वह कर्त्ता भी है और अकर्त्ता भी। संसार में विचरता भी है और नहीं भी विचरता।

7 मैं ब्रह्म हूं

ओ३म्
अमर है
आत्मा
आत्मा में है
परमात्मा
एहो असलियत ब्रह्म
स्वरूप प्रकाश
है जे ओ मेरा
अपना
हम ब्रह्म प्रकाश
हम
हम ब्रह्म प्रकाश
हां
हम हर अन्दर निवास
हम
हम हर अन्दर निवास
हां
हम हर अन्दर प्रवेश
हम
हम हर अन्दर प्रवेश
हां
हम हर अन्दर विशेष
हम
हम हर अन्दर विशेष
हां
हम ब्रह्म हम
हम ब्रह्म हां

9

हीरा है घट घट वासी हीरा है सर्व निवासी।
हीरे दी पहचान दा तरीका सब नूं समझाई ओ जावां।
हीरा मैं पाई ओ जावां हीरे दी वेद विदित सब नूं समझाई ओ जावां।।

4 फिर सर्गुण दियां खेडां ओ देखे निर्गुण दियां खेडां ओ देखे

शब्दः- कैसा है चमत्कार, ओहो कैसा है चमत्कार। हकूमत दी कुर्सी ते बैठे भगवान।।
हेठां संस्था बैठ गई, पिच्छों खड़े दरबान। आलम खिड़ खिड़ हस्से, कुर्सी ते बैठे कृपानिधान।।

जिन्हां सजनां दी जोत जगे निर्वाण, ओ सर्गुण दियां खेडां खेडे। ओ निर्गुण दियां खेडां खेडे, कैसा है चमत्कार ओहो कैसा है चमत्कार, निर्गुण में जोत ओ जग रही, बिन सूरजों है ओ रौशनाई। रौशनी ओ रौशनी है ओ सर्व सबाई।

बिन सूरजों ओ जग रिहा जग रिहा ओ परमधाम, ओ सर्गुण दियां खेडां खेडे।

ओ निर्गुण दियां खेडां खेडे, कैसा है चमत्कार, ओहो कैसा है चमत्कार। रूप रंग रेखा मुक गई, फिर तीनों तापों के टैम्परेचर की समाप्ति होई। ओ सर्गुण दियां खेडां खेडे, ओ निर्गुण दियां खेडां खेडे, कैसा है चमत्कार। ओहो कैसा है चमत्कार।

यह युक्ति है जीवन बनाने की जिसकी चाह हो वह इस युक्ति पर चलकर अपने आप की पहचान कर सकता है।

सजनों अलफ़ के मिलने से पहले इन्सान कठिन होता है यानि उसको संसारी कन रस होता है। अलफ़ के मिलने के बाद वह नर्म हो जाता है यानि उसको शास्त्र का कन रस पड़ जाता है। फिर 'ये' के मिलने पर वह वज्र हो जाता है फिर उस पर ईंट रोड़ा कोई प्रहार नहीं कर सकता। फिर न अलफ़ रहा न 'ये' रहा। यह है अफुर अवस्था। फिर वह सजन गगन मण्डल में जहाँ रूप रंग रेखा नहीं महाराज जी के साथ मेल खा जाता है। बिन औखियाइयों बिन खेचलों, बिन तकलीफों वह जन्म की बाज़ी को जीत लेता है। यहां पर तीनों तापों का टैम्परेचर जो घटता बढ़ता रहता है वह समाप्त हो जाता है। जैसे बुखार घटता बढ़ता रहता है इसी तरह हमारे स्वभावों का टैम्परेचर भी घटता बढ़ता रहता है। अगर हम संतोष पर काबू पाते हैं तो धैर्य छूट जाता है। धैर्य पर काबू पाते हैं तो सच्चाई-धर्म छूट जाता है। इस युक्ति पर चलने से तीनों तापों का रोग मिट जाएगा और हमारे सब सवाल हल हो जायेंगे। फिर समभाव जो एक निगाह एक दृष्टि देखनी होती है बिना यत्न के उस की प्राप्ति हो जाएगी, यह है जन्म की बाज़ी को जीत लेना। सजनों आप ने सुना है कि सजन अर्जुन ने सजन कृष्ण महाराज जी को बताया कि मैंने आज चतुर्भुजधार का चमत्कार देखा है। महाराज जी ने कहा कि अर्जुन यह प्रकाश तेरी असलियत अपना आप प्रकाश है। यही प्रकाश कुल दुनियां है। इस पर खड़े हो जाओ। सजन अर्जुन ने वचन प्रवान किए उस चमत्कार के साथ निगाह जोड़ ली और संसारी व परमार्थी दोनों राज्य प्राप्त कर लिए।

5

(१) मूलमंत्र है जे ओ आद अक्षर जेहड़ा सजन इक रस हो के चलावेगा। युवा-अवस्था नाले बल दी प्राप्ति, शक्ति वल्लों ओ ताकतवर हो जावेगा ओ शक्ति वल्लों ताकतवर हो जावेगा।।
(२) मूलमंत्र है जे आद अक्षर, जेहड़ा सजन इक रस हो के चलावेगा। जेहड़ा मन मन्दिर है जे ओ चमत्कार, ओही असलियत है जे ओ अपना आप। प्रकाश नाल प्रकाश हो जावेगा ओ प्रकाश नाल प्रकाश हो जावेगा।।
(३) जेहड़ा सजन उस चमत्कार अपने प्रकाश नाल दोनों नैन मिला के दो साल परिपक्क हो जावेगा। विराट नगरी कुल दुनियां अन्दर अपना प्रकाश ही ओ पावेगा अपना प्रकाश ही ओ पावेगा।।

6

(४) अपनी असलियत पहचान गया फिर छूट गया अक्षर उस सजन दा फिर 'ये' नूं ओ पावेगा। फिर 'ये' इक रस जिस सजन दा ओ चल पड़ा फिर ओ आकाशों आकाश पातालों पाताल। और सप्तद्वीप भूमण्डल गगन मंडल में स्थिर हो जावेगा ओ गगन मंडल में स्थिर हो जावेगा।।
(५) फिर प्रवेश हुआ कुल दुनियां अन्दर सब दियां जानन वाला हो जावेगा। जेहड़ी गुज़र गई जेहड़ी इस वक्त जेहड़ी आने वाली त्रिकालदर्शी नाम कहावेगा त्रिकालदर्शी नाम कहावेगा।।
(६) फिर रूप रंग न रेखा कोई, सजनों बिन सूरजों चानणा हो जावेगा। फिर ज्योति स्वरूप पारब्रह्म परमेश्वर नाम कहावेगा ओ पारब्रह्म परमेश्वर नाम कहावेगा।।

10

नोटः- सजनों ऊपर लिखे जो वचन हैं यह अपने आप की पहचान करने का तरीका है, इन वचनों पर चलने से इन्सान अपने आप की पहचान कर सकता है। मीटिंग के दिन पहले यह बातें लैक्चर वाला सजन संगत से पूछे और फिर संगत का एक सजन लैक्चर वाले से पूछे। सच बोलो, सच बोलो सजनों सच बोलो। गृहस्थ आश्रम आप का ठीक है या नहीं सच बोलो, तीन टाईम आप का अखण्ड पाठ ठीक है या नहीं सच बोलो, ठीक उत्तर दो प्रकाश है या नहीं। सच बोलो।